जय श्री श्याम

मैं मीरा जगनानी स्व० श्याम लाल जी की पत्नी 26 नवंबर 1973 को ब्याह कर बिहारी भवन में आई थी। बिहारी भवन, जो बिहार के सीवान जिले के महाराजगंज में एक शानदार कोठी रही। जिसका नाम उस पीढ़ी के बड़े भाई स्व० बिहारी लाल जी के नाम पर रखा गया था।

बिहारी लाल जगनानी में अद्भुत वाक्पटुता थी। अपनी लच्छेदार बातों से किसी को भी प्रभावित कर लेते थे। स्व० कुँजलाल जी सहृदयी, समाजसेवी और कुशल व्यापारी थे। वे समाज के छोटे से छोटे व्यक्ति तक पहुँचते थे और शहर में आने वाले बड़े से बड़े व्यापारी तक उनकी पहुँच थी। परिवार के सभी बेटे-बेटियों, बहुओं का सम भाव से लाड करते थे। यह मेरा दुर्भाग्य रहा कि मैं उनके स्नेह से वंचित रह गई। स्व० लीलाधर जगनानी संघर्षशील व्यक्तित्व, जो एक स्वतन्त्रता सैनानी रहे। जिन्हे सम्मानित भी किया गया था।

स्व० सँवलराम जी के प्रथम पुत्र स्व० काशीनाथ जी मातृ-पितृ भक्त तथा त्यागी थे। इनके द्वितीय पुत्र स्व० जुगल किशोर जी बिहार से सर्वप्रथम गुजरात के जामनगर में बसे थे। उनका नमक का व्यापार था। उनके तृतीय पुत्र स्व० धर्मनाथ जगनानी को मैं एक मार्गदर्शक के रूप में देखती हूँ। एक बार कुछ विशेष कार्य वश 9-10 दिन महाराजगंज रहना हुआ। समस्या खड़ी होने पर उन्होंने मुझसे कहा था कि यदि बहुत कुछ देने पर भी शांति मिलती है तो ~~ले लेना~~ यह सौदा अवश्य करना चाहिए। यह बात आज तक मेरा मार्ग दर्शन करती है। उनके चतुर्थ पुत्र श्री नन्द किशो

जगनानी एकता तथा पारिवारिक रिश्तों को निभाने में अग्रगण्य रहे।

स्व० बिहारी लाल जी के एक मात्र दत्तक पुत्र श्री श्याम सुन्दर जी जगनानी। इनका महाराजगंज में अपना ही रुतबा रहा। उनके रहते किसी साधारण व्यक्ति को बिहारी भवन के चबूतरे पर चढ़ने के लिए कम से कम दो बार सोचना पड़ता था।

स्व० कुँजलाल जी के प्रथम पुत्र स्व० श्यामलाल जी जगनानी। सहनशील, आत्मसंयमी साधारण सा प्रतीत होने वाला यह व्यक्तित्व मातृ-भक्त था। इसने बहुत सारी विषम परिस्थितियाँ झेलीं परन्तु अपनी बुद्धि चातुर्यता से न सिर्फ अपने बालकों को बल्कि अपनी पत्नी को भी एक योग्य नारी बना दिया। मैं- मीरा जगनानी उनकी पत्नी सदा उन पर गर्व करती रहूँगी। उनके प्रथम पुत्र शारद कुमार जगनानी और द्वितीय पुत्र शिशिर कुमार जगनानी दोनों ही गुजरात के सुरत में हैं और कपड़े का व्यापार करते हैं। कुँज लाल जी के द्वितीय पुत्र श्री श्याम शरण जगनानी बड़े ही निश्छल और शांत प्रकृति के हैं। ये सरस, सहृदय और मृदुभाषी भी हैं। इन्होंने कभी अपनी माँ और बड़े भाई की अवहेलना नहीं की। इनके प्रथम पुत्र आदर्श जगनानी और द्वितीय पुत्र आकाश जगनानी सुरत - गुजरात में मशीनरी - पार्ट्स का व्यापार करते हैं। तृतीय पुत्र आशीष जगनानी सुरत में ही सॉफ्टवेयर इंजीनीयर हैं।

स्व० लीलाधर जी जगनानी के प्रथम पुत्र रहे स्व० मोहन लाल जी जगनानी। अपनी सहज और शांत पूर्ण वाणी से सही दिशा दिखा जाना उनका व्यक्तित्व था। मुझे याद

है, एक बार उन्होंने माँ (कपुरी देवी) से अनायास ही पूछा था कि तुम्हारी पुत्रवधू कैसी है। उन्होंने कहा था कि अच्छी तो है परन्तु कौशल्या (पत्नी मोहनजी) जैसी नहीं है। उस समय मैं गद्गद् हो गई जब खम्भे के पीछे से मैंने सुना कि भाई साहब कह रहें कि माँ को मीरा अच्छी लगती है और ताई! तुम्हे कौशल्या। है तो दोनो ही अच्छी। इनके प्रथम पुत्र हैं मनोज कुमार जगनानी जिन्होंने पुरे जगनानी परिवार को जगनानी परिवार से परिचय कराने का बड़ा ही सराहनीय कार्य किया है। सरलता से ओत प्रोत श्री राधे श्याम जगनानी स्व॰ लीलाधर जी के दुसरे पुत्र हैं। हास्य-रस के धनी तीसरे पुत्र स्व॰ संतोष कुमार जी हैं। श्री प्रमोद कुमार जगनानी सब भाइयों में छोटे इनके चौथे पुत्र हैं।

स्व॰ सौंकलराम जी की एकमात्र पुत्री स्व॰ सीता देवी थी जो मातृवत स्नेह रखती थी। कुँज लाल जी की प्रथम पुत्री श्रीमती कमला देवी मस्करा जिनका विवाह रक्सौल (बिहार) में हुआ वो अब सुरत (गुजरात) में अपने पुत्र अशोक मस्करा के साथ रहती हैं। उनका हमेशा मार्गदर्शन मिलता रहता है। दुसरी पुत्री श्रीमती बिमला देवी, उनका विवाह कटिहार में हुआ और उनके चार पुत्र और ~~एक~~ तीन पुत्री हैं। तीसरी पुत्री स्व॰ निर्मला देवी थी जिनका विवाह उत्तरप्रदेश के मिर्जापुर में हुआ था। स्व॰ शांतिदेवी स्व॰ लीलाधर जी की प्रथम पुत्री थी। उनके हृदय में प्रेम का प्याला सबके लिए सदा भरा रहा। मृदुभाषी और स्नेही स्वभाव वाली श्रीमती शीला देवी इनकी दूसरी पुत्री हैं जिनका विवाह पटना में हुआ था। आजकल वो स्वपरिवार दिल्ली में हैं। भाई-भतीजो से असीम स्नेह रखने वाली स्व॰ प्रेमा पालीवाल इनकी तीसरी

पुत्री थी जिनका बिहार के पुसा रोड में हुआ था। बाद में वे लोग सूरत में आ कर रहने लगे। अपने उदार स्वभाव के कारण जगनानी परिवार के कई लोगों को यहाँ बसाया। इनकी चौथी पुत्री श्री मती सरिता देवी मुंगेर में ब्याही गयीं। बड़ी अपने हास्य-व्यंग्य से सबको लुभाती है।

जिनसे मेरा अत्यधिक सानिध्य रहा उन महान जगनानी परिवार की उन महान आत्माओं के विषय में अवश्य लिखना चाहूँगी। स्व० गिमिया देवी जाने के एक दिन पहले मुझे लगभग तीन घंटे सानिध्य अपने पास बिठा कर अपने जीवन के एक एक पन्ने खोल कर रख दिये। बाद में जब मैंने अपने पति (श्याम लाल जी) को यह कहा कि मुझे क्यों नहीं पता चला कि कल वो जाने वाली हैं तो उन्होंने कहा था कि मैं भी काशी भैया के साथ था तब प्रति शाम अपने जीवन का एक एक महत्वपूर्ण पन्ना खोलते थे। तब मुझे भी कहाँ पता था कि वो दुनिया छोड़ने वाले हैं। ये वो महान आत्माएँ थीं जिन्होंने अपने जीवन के कागज पर जो कुछ लिखा था सादा कर के जैसे आये थे चले गए। स्व० श्याम लाल जगनानी जिन्हें कभी किसी चीज की लालसा रही ही नहीं। उनको जीवन के अन्त तक न जीवन की लालसा रही और न मरने की लालसा। बिलकुल निर्लिप्त हमेशा रहे।

इस परिवार जगनानी परिवार की सभी पुत्रवधुओं ने अपनी अपनी विशेष योग्यता के साथ परिवार को आगे बढ़ाने का काम किया है। जगनानी परिवार की अगली पीढ़ी और भी प्रतिभाशाली है। इनकी प्रतिभा अपने अपने क्षेत्र में और भी उज्जवल हो यही कामना है। ईश्वर

इस परिवार की वंश वृद्धि करता रहे।
वंश वृद्धि पूर्वजो के आशीर्वाद और देवी देवताओं की कृपा से होती है। हम सभी जानते हैं कि हमारी कुल देवी दीना-मीना सती हैं। परन्तु उनका इतिहास हमें नहीं पता। मेरा मानना है कि सर्वप्रथम हमें उनके इतिहास की खोज करनी चाहिए। उनका जन्म, उनका विवाह कहाँ और किससे हुआ। सती कब और कहाँ हुई आदि। आज के युवाओं के लिए यह आसान होगा क्योंकि ऐप-गूगल आदि उन्हें चलाना आता है।
जय श्री श्याम। जय दादी की।